Timax®

अलंकार

NEP 2020
ENHANCED EDITION

हिंदी व्याकरण

अध्यापक सहायक-पुस्तिका

5

अलंकार हिंदी व्याकरण -5

पृष्ठ संख्या 8

1. (क) 22 (ख) पंजाबी (ग) बोली

2. (क) मन के विचारों को प्रकट करने के साधन को भाषा कहते है।
(ख) मौखिक व लिखित
(ग) भाषा के शुद्ध प्रयोग के लिए नियमों को ज्ञान कराने वाला शास्त्र व्याकरण कहलाता है।
(घ) किसी भी भाषा की लिखने की विधि को बोली कहते हैं।
(ङ) मणिपुरी, मराठी, नेपाली, उड़िया, पंजाबी, संस्कृत संथाली, सिंधी, तमिल असमिया, डोगरी, बोड़ों, बंगाली, हिंदी मैथिली, मलयालम, उर्दू, तेलुगू गुजराती, कश्मीरी, कोंकणी, कन्नड़

3. (क) 22 (ख) चिहन ही (ग) हिंदी (घ) बोली

4. (क) मोहन विद्यालय जाता है। (ख) सुहानी पत्र लिख रही है।
(ग) राहुल का बस्ता खो गया।
(घ) हिंदी दिवस 14 सितंबर को मनाया जाता है।
(ङ) हिंदी भाषा देवनागरी लिपि में लिखी जाती है।

5.

हिंदी	**देवनागरी**
पंजाबी	गुरुमुखी
बंगाली	बांग्ला
अंग्रेजी	रोमन
उर्दू	फारसी

करें और सीखें

बच्चे स्वयं करें

पृष्ठ संख्या 16

1. (क) गृह (ख) पीड़ा (ग) सात (घ) क् + ष = क्ष

2. (क) वर्ण भाषा की सबसे छोटी इकाई है, जिसके और टुकड़े नहीं किए जा सकते।
(ख) स्वर रहित व्यंजन के नीचे लगी तिरछी रेखा को हलंत कहते हैं।
(ग) दो स्वर व व्यंजन (घ) स्पश्र, अंतःस्थ व ऊष्म व्यंजन
(ङ) ह्स्व व दीर्घ

3. (क) (ख) (ग) (घ)

4. (क) ऋ इ अ उ
(ख) औ ए ऊ ई ऐ आ ओ

5. पक्का कच्चा पल्ला मिट्टी लड्डू

6.

अनार	**कार्य**
तालाब	चरखा
इमली	तालाब

दुनिया टमाटर

सूरज हलवा

7. (क) औ + र् + अ + त् + अ

(ख)अ + ज् + अ + ग् + अ + र् + अ

(ग) ब् + इ + ज् + अ + ल् + ई

करें व सीखें

बच्चे स्वयं करें

पृष्ठ संख्या 23

1. (क) सर्प (ख) पाठशाला
   (ग) अनेकार्थी (घ) विदेशज़
   (ङ) रसोईघर
2. (क) वर्णों का सार्थक मेल शब्द कहलाता है।
   (ख) छह प्रकार
   (ग) जो शब्द विदेशी भाषाओं से हिंदी भाषा में अपनाए गए हैं।
3. (क) रुढ़ (ख) यौगिक
   (ग) योगरुढ़
4. पाँच प्रकार हैं।

2.

(क)	अग्नि	गृह	रात्रि	सर्प	ग्राम	नेत्र
(ख)	साँप	आग	रात	घर	आँख	गाँव

4. (ख) देव + आलय (ग) नगर + वासी
   (घ) पाठ + शाला (ङ) रसोई + घर
   (च) व्यायाम + शाला
5. (क) मैंने सभी प्रश्नों के उत्तर लिख दिए हैं।
   (ख) फल मेरी मम्मी डॉक्टर के पास गई थी।
   (ग) मेरी बहन का नाम प्रेरणा है।
   (घ) तालाब में सफेद कमल खिले हैं।
   (ङ) सब बच्चे सुबह पाठशाला जाते हैं।

करें और सीखें

(क) अरबी (ख) तुर्की (ग) अंग्रेजी (घ) अंग्रेजी
(ङ) तुर्की (च) चीनी (छ) फ़ारसी

पृष्ठ संख्या 29

1. (क) दोनों (ख) ममता (ग) समुदाय वाचक
2. (क) किसी प्राणी व्यक्ति, वस्तु, स्थान या भाव के नाम का बोध कराने वो शब्द संज्ञा कहलाते हैं। इसके पाँच भेद हैं।

(ख) जिन संज्ञा शब्दों से किसी प्राणी या वस्तु आदि के समूह का बोध होता है वे समुदायवाचक संज्ञा तथा जो शब्द किसी धातु, द्रव्य, पदार्थ आदि का बोध कराते हें, उन्हें द्रव्यवाचक संज्ञा कहते है।

(ग) देश में आज भी जयचंदों की कमी नहीं है।

3. (क) शिशुता (ख) बचपन (ग) मोटापा (घ) थकावट
(ङ) निजता (च) अच्छाई (छ) सुंदरता (ज) खेल
(झ) मधुरता

4. (क) सुंदरता (ख) बचपन (ग) ऊँचाई (घ) मोटापा (ङ) थकावट

व्यक्ति	**जाति**	**भाववाचक**
दिल्ली	बाज़ार	दर्शनीय
भारत	जानवर	कमी
इंद्रप्रस्थ	हिरण, पक्षी	खुशी
लालकिला	हाथी, बच्चों	आनंद

पृष्ठ संख्या 34

1. (क) विद्यालय (ख) मादा मछली
(ग) लिंग (घ) भाषा, लिपि

2. (क) जिन शब्दों से पुरुष व स्त्री जाति का बोध होता है। इसके दो भेद हैं।
(ख) पुल्लिंग शब्दों से पुरुष जाति का बोध होता है।
स्त्रीलिंग शब्दों से स्त्री जाति का बोध होता है।
(ग) क्रिया व विशेषण से की जाती है। जैसे-कोट चमक रहा है। पत्थर बड़ा है।

3. (क) बुढ़िया (ख) देवर
(ग) मामी (घ) मोरनी
(ङ) मालकिन

4.
सदा पुल्लिंग	**सदा स्त्रीलिंग**
(क) भारत	गंगा
(ख) मंगल ग्रह	देवनागरी
(ग) सोमवार	संस्कृत
(घ) हिमाचल	अवधी

करें और सीखें

(क) बहन (ख) गायिका
(ग) साध्वी (घ) सेठानी
(ङ) ठकुराइन (च) पुत्री
(छ) आचार्या (ज) शिष्या
(झ) वधू (ञ) विदुषी

पृष्ठ संख्या 38

1. (क) तिथियाँ (ख) छात्रगण (ग) आँखे
2. (क) संज्ञा व सर्वनाम के जिस रूप से उसकी संख्या का पता चलता है। वह वचन कहलाता है। इसके दो भेद हैं।
   (ख) वचन बदलने पर संज्ञा व क्रिया का रूप भी बदल जाता है।
   (ग) बहुवचन का प्रयोग होता है।
   पिता जी आए हैं।
3.

बहुवचन	**एकवचन**
बहनें	मक्खी
युवावर्ग	युवा
ऋतुएँ	बहन
सेनादल	आप
आँखें	किताब
आप लोग	
दर्शन	

4. (क) माँ ने साधु को भेजन कराया। साधुओं ने गंगा में डुबकी लगाई।
   (ख) मेरे पड़ोस में महिला अकेली रहती है। कल महिलाओं ने मोर्चा निकाला।
   (ग) मेरा भाई युवा है। आज युवावर्ग अपने हक के लिए लड़ रहा है।
5. (क) राहुल के पास अनेक पुस्तकें हैं।
   (ख) हमने गुडियाँ खरीदीं।
   (ग) हमने झूले झूले।
   (घ) चिड़ियाँ चहचहाती हैं।

करें और सीखें

(क) चलों। गुड़िया को तैयार करें।
(ख) वे दोनों कहीं जा रही हैं।
(ग) दो सहेलियाँ बात कर रही है।
(घ) बच्चें कक्षा में पढ़ रहें हैं।
(ङ) पक्षी दाना चुग रहे हैं।
(च) पाँच पुस्तकें रखी है।

पृष्ठ संख्या 42

1. (क) सम्मान- अपमान
   (ख) सुगंध- दुर्गंध
   (ग) जीवन-मरण
   (घ) उन्नति- अवनति

2. (क) उल्टा अर्थ बताने वाले शब्दों को विलोम शब्द कहते हैं
(ख) विपरीतार्थक या विपरती शब्द

3. (क) पुरातन (ख) नवीन (ग) मरण (घ) अपमान
(ङ) परलोक (च) प्रतिकूल

4. (क) धूप (ख) पश्चिम (ग) सरल (घ) उजाला

करें और सीखें

समर्थन	नीरस
अनावश्यक	नकर
अनुचित	नरम
मानव	वाचाल
जीवन	पतन
अस्त	एक

पृष्ठ संख्या 47

1. (क) अनिश्चय वाचक (ख) तीन
(ग) उत्तम पुरुष (घ) प्रश्नवाचक

2. (क) जो शब्द संज्ञा शब्दों के स्थान पर प्रयोग किए जाते हैं, वे सर्वनाम कहलाते हैं।
(ख) तीन
(ग) जो सर्वनाम शब्द किसी व्यक्ति, वस्तु आदि की ओर निश्चयपूर्वक संकेत करें, वे निश्चयवाचक सर्वनाम तथा जिस सर्वनाम शबद के द्वारा किसी निश्चित व्यक्ति तथा वस्तु का बोध न हो, उसे अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं।
(घ) ऐसे सर्वनाम शब्द जिनसे वाक्य के दूसरे सर्वनाम शब्द से संबंध स्थापित किए जाए, उन्हें संबंधवाचक सर्वनाम कहते है। जैसे
जिसने मेहनत की उसने फल खाया
(ङ) प्रश्नवाचक सर्वनाम का प्रयोग प्रश्न पूछने के लिए किया जाता है।

3. (क) मैं अपना कार्य स्वयं कर लूँगा। (ख) यह किसकी कमीज़ है।
(ग) वह बाज़ार चला गया। (घ) तुम यह बात किसी को मल बताना।
(ङ) तुम्हारे साथ कौन आया है।

4. (क) आप- पुरुषवाचक
(ख) वह - पुरुषवाचक, अपने आप निजवाचक
(ग) कोई- अनिश्चयवाचक (घ) कौन- प्रश्नवाचक
(ङ) किसी- अनिश्चयवाचक

5. (क) मैंने अपना खाना खा लिया है।
(ख) मुझे आपसे कुछ काम है।
(ग) मुझे अपना काम करने दो।
(घ) उन्हें बाज़ार जाना है।
(ङ) तुझे पिता जी बुला रहे हैं।

पुरुष	निश्चय	अनिश्चय	प्रश्न	संबंध	निजवाचक
उसे		किसने	क्या	जैसा	स्वयं
उन्होंने			कौन	उसका	खुद
तु, वह					
मैं					
जिसने					
तुम्हारा					
उसका					
हम					
आप					
मुझे					

पृष्ठ संख्या 51

1. (क) सकर्मक (ख) गाती है (ग) आम
2. (क) जिस शब्द से किसी काम का करना या होना पाया जाता है, उसे क्रिया कहते हैं। इसके दो भेद है।
   (ख) जिन क्रियाओं का फल कर्म पर पड़ता है, उन्हें सकर्मक तथा जिन क्रियाओं का फल कर्ता पर पड़ता है, उन्हें अकर्मक क्रिया कहते हैं।
   (ग) जिन क्रियाओं में दो कर्म होते हैं उन्हें द्विकर्मक कहते है।
3. (क) निकलती (ख) नाचा (ग) खेल (घ) धोता है। (ङ) देख
4. (क) सो रहा है — अकर्मक
   (ख) पढ़ती है। — सकर्मक
   (ग) भौंकता है। — अकर्मक
   (घ) बैठी है — अकर्मक
5. (क) मजदूर अपना काम करने लगे। (ख) राधिका चित्र बनाती है।
   (ग) मेरी पुस्तक किसी ने चुरा ली (घ) गायिका गाती है।
   (ङ) रात के समय ठण्डी हवा चल रही है।

करें और सीखें

स्वयं करें

पृष्ठ संख्या 57

1. (क) दोनों (ख) चार
   (ग) ऐतिहासिक (घ) एक लीटर
2. (क) संज्ञा व सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्द विशेषण कहलाते हैं।
   (ख) विशेषण की विशेषता बताने वाले शब्द प्रविशेषण कहलाते हैं। जैसे अत्याधिक गहरा।

(ग) जो विशेषण शब्द संज्ञा व सर्वनाम की विशेषता का बोध कराते हैं, वे संख्यावाची विशेषण तथा जो विशेषण शबद संज्ञा व सर्वनाम की माप-तोल संबंधी विशेषता का बोध कराते हैं वे परिमाणवाचक कहलाते हैं।

(घ) ये खिलौने

3. वह घर

(क) लाल (ख) तीन लीटर (ग) नई (घ) पुरानी

4. (क) हास्व कवि (ख) गहरा समुद्र (ग) चालाक लोमड़ी

(घ) प्रतिभाशाली विद्‌यार्थी (ङ) श्वेत संगमरमर

(च) अँधेरी रात

5.

विशेषण	**भेद**
(क) ये	संकेतवाचक
(ख) थोड़ा	परिमाणवाचक
(ग) तीन मीटर	परिमाणवाचक
(घ) लाल	गुणवाचक
(ङ) कई	संख्यावाचक
(च) बहुत	संख्यावाचक

6. (क) भाषा (ख) खाना

(ग) पुस्तक (घ) पदार्थ

(ङ) विद्‌यालय (च) चावल

करें और सीखें

संज्ञा	**सर्वनाम**	**विशेषण**
राजा	मैं	सुंदर
मीना	उन्हें	बद्‌धिमान
तितली	मुझे	प्राचीन
कुम्हार	आप	लाल

पृष्ठ संख्या 61

1. (क) भविष्यत्‌काल (ख) भूतकाल

(ख) क्रिया के जिस रूप से उसके होने के समय का पता चले, उसे काल कहते हैं।

(ग) क्रिया के जिस रूप से कार्य के बीते हुए समय में होने का पता चले, उसे भूतकाल कहते हैं।
जैसे- समीप कल विद्‌यालय गया था।

(घ) गा, गी, गे शब्दांशों क्रियाओं का प्रयोग होता है।
जैसे- हर्षवर्धन कल दिल्ली जाएगा।
मेरे मामा कल आएँगे।

(घ) क्रिया के जिस रूप से कार्य के वर्तमान समय में होने का पता चलता है उसे वर्तमान काल कहते हैं। प्रेरण भोजन कर रही है।
नेहा नृत्य कर रही है।

3. (क) करेगी (ख) हुई थी (ग) कर रहा है (घ) लिखेगा
(ङ) याद कर रहा है। (च) जाएँगे।

4. (क) अवनी खाना खा रही है। अवनी खाना खाएगी।
(ख) मोहन ने लिखा मोहन लिखेगा
(ग) हमने मैच देखा हम मैच देख रहे हैं।
(घ) हम लाल किला देख रहे हैं।
मैं लाल किला देखूँगा।

5. (क) रीमा विद्यालय जाएगी। (ख) मंयक खाना खाएगा।
(ग) कल वर्षा होगी। (घ) गीता पढ़ेगी।
(ङ) रजनी जाएगी। (च) प्रिया सोएगी।

करें और सीखें

भूत	**वर्तमान**	**भविष्य**
बंद हो रही थी	लिख रहा है	जाएगा
गई थी	नाच रहा है।	देखेगा
चमक रही थी	घूम रहा है।	करेगा।

पृष्ठ संख्या 66

1. (क) संबोधन कारक
(ख) कर्ता कारक (ग) संबोधन कारक

2. (क) कारकों के साथ लगे चिह्न को परसर्ग कहते हैं।
(ख) संज्ञा व सर्वनाम के जिस रूप से अलग होने का बोध होता है, उसे अपादान कारक कहते हैं। करण कारक में से साधन के लिए जबकि अपादान में 'से' का प्रयोग अलग होने के अर्थ में होता है।
(ग) शब्द के जिस रूप से किसी को पुकारा जाए उसे संबोधन कारक कहते हैं।
(घ) कर्ता-ने
कर्म-को
करण-से
सम्प्रदान - के लिए
अपादान- 'से' अलग होना
संबंध -को के की रा रे री
अधिकारण - में, पर
संबोधन - हे! अरे!

3. (क) 'के' (ख) को (ग) से (घ) हे (ङ) के लिए

4. (क) माँ ने बच्चों के लिए कपड़े खरीदें। (ख) मेज़ पर पुस्तक रखी है।

(ग) मैंने पेंसिल के द्वारा लिखा। (घ) राम ने रावण को बाण से मारा।
(ङ) मैंने दस रुपए का पेन खरीदा।

5. (क) अधिकरण (ख) कर्ता (ग) संबंध (घ) सम्प्रदान

6. (क) विकास ने घड़ी खरीदी। (ख) हाथ की हथकड़ी टूट गई।
(ग) नेता जी के स्वागत में लोग खड़े हो गए।
(घ) वृक्ष से पत्ते गिरते हैं।
(ङ) पिता जी बच्चों के लिए मिठाई लाए।

करें और सीखें

में, का, में, ने, की। से, की। ने, हेमहात्मन! के लिए, की''। ने, की की पूर्ति करें।''

पृष्ठ संख्या 71

1. (क) समुच्चयबोधक (ख) निपात
(ग) हे भगवान!

2. (क) जिन शब्दों पर लिंग, वचन, काल तथा पुरुष का कोई प्रभाव नहीं पड़ता वे अत्यय कहलाते हैं इसके पाँच भेद हैं।
(ख) जो शब्द हर्ष, शोक, भय, घृणा तथा विस्मय आदि भावों का बोध कराते हैं, वे विस्मयादिबोधक कहलाते हैं।
(ग) कालवाचक परिमाणवाचक तथा
स्थानवाचक रीतिवाचक
क्रिया-विशेषण
(घ) जो अव्यय शब्द दो शब्दों या वाक्यों को जोड़ते हैं, उन्हें समुच्चयबोधक कहते हैं। तो अव्यय शब्द संज्ञा या सर्वनाम का सम्बंध वाक्य के अन्य शब्दों से बताते हैं, उन्हें संबंधबोधक कहते हैं।

3. (क) वाह! (ख) पर (ग) और (घ) के साथ

4. (क) वहाँ (ख) के समान (ग) के पीछे (घ) के पास

5. (क) पहला करूँ अथवा दूसरा करूँ। (ख) शाबाश! क्या चौका मारा है।
(ग) सोहन घर की तरफ गया था। (घ) समीप और प्रेरणा गए थे।
(ङ) प्रिया बाज़ार जा रही थी इसलिए रिया भी साथ गई।
(च) वह अभी-अभी आए हैं।

करें और सीखें

1. (क) उधर (ख) दोनों (ग) आज (घ) थोड़ा

2. (क) जो शब्द क्रिया की विशेषता बताएँ, क्रिया-विशेषण कहलाते हैं।
(ख) जिस क्रिया विशेषण से क्रिया के होने की रीति का पता चलता हे, उसे रीतिवाचक क्रिया-विशेषण कहते हैं जबकि जिस क्रिया-विशेषण से क्रिया की मात्रा या नाप-तोल का पला चलता है, उसे परिमाावाचक क्रिया-विशेषण कहते हैं।

(ग) जिस क्रिया-विशेषण से क्रिया के होने के स्थान या दिशा का पता चलता है उसे स्थानवाचक क्रिया-विशेषण कहते हैं।

(ङ) कालवाचक, स्थानवाचक, रीतिवाचक तथा परिमाण वाचक

3. (क) चित्रकारी की (ख) से मनाया। (ग) दिखती हैं। (घ) आई हैं।

(ङ) निकली है।

4. (क) सवेरे कालवाचक

(ख) बहुत परिमाण

(ग) कभी कालवाचक

(घ) प्रतिदिन कालवाचक

(ङ) दिन भर कालवाचक

(च) प्रतिदिन कालवाचक

(छ)

(ज) दिन भर कालवाचक

(झ) अकसर कालवाचक

(ञ) यहाँ स्थान वाचक

करें और सीखें

उधर	बहुत
थोड़ा	रोज़
वहाँ	
प्रतिदिन	

पृष्ठ संख्या 79

1. (क) योजक चिह्न (ख) वाक्य के अंत में

(ग) उद्घरण चिह्न

2. (क) आठ प्रकार के हैं। (ख) पं0, डॉ0

(ग) लिखित भाषा में विराम प्रकट करने वाले चिह्नों को विराम-चिह्न कहते हैं।

(घ) (“ ”) माँन कहा- ''बेटा, जल्दी सो जाओं।''

3. (क) (अर्घ विराम) (ख) प्रश्नवाचक चिह्न

(ग) संबोधन चिह्न (घ) उद्धरण चिह्न

(ङ) पूर्ण विराम

4. (क) छिः! (ख) जानते हैं? (ग) “ !”

(घ) आरती, सुमन और रेखा एक ही कक्षा में पढ़ती हैं।

5. (क) हमें अमीर-गरीब में भेदभाव नहीं करना चाहिए।

(ख) आप का घर कहा है?

(ग) शास्त्री जीने कहा ''जय जवान, जय किसान।''

(घ) हे प्रभु! दया करो।

करें और सीखें

बच्चे स्वयं करें

पृष्ठ संख्या 82

1. (क) असि (ख) उत्कर्ष (ग) निपुण (घ) पत्र

2. (क) समान अर्थ वाले शब्दों को पर्यायवाचक कहते हैं।

(ख) घोड़ा घोटक

(ग) भ्रमर, भँवरा, अलि, मधुकर

(घ) सर्प, नाग

3. (क) कृपाण (ख) कूल (ग) उत्थान (घ) अंबर

(ङ) दुष्करण (च) दनुज (छ) आदमी

4. (क) तरक्की (ख) अग्नि (ग) ध्वज (घ) जल

(ङ) घटा (ग) मित्र

5. (क) हे प्रभु! सद्बुद्धि देना।

(ख) हर्षवर्धन हमारे अंतिम नृप थे।

(ग) ईश्वर ने सुंदर धरा का निमार्ण किया है।

(घ) मानव सामाजिक प्राणी है।

(ङ) बादल गरज रहे हैं।

(च) चाँद की चाँदनी खिली हुई है।

करें और सीखें

(क) आत्मज, सुत (ख) वारि

(ग) देवलोक (घ) कानन

(ङ) मेघ (च) दिन

(छ) महिला (ज) गज

(झ) असुर (ञ) सर्प

पृष्ठ संख्या 87

1. (क) अमूल्य (ख) नास्तिक (ग) आदरणीय

2. (क) एक वाकयांश के लिए प्रयोग किए जाने वाले एक शब्द को अनेक शब्दों के लिए एक शब्द कहते हैं।

(ख) आलोचक

(ग) भाषा को सुंदर प्रभावशाली बनाने के लिए।

(घ) अनुज

3. (क) अमर (ख) गणितज्ञ (ग) दूरदर्शी (घ) जलचर

4. (क) अद्वितीय (ख) अनिवार्य (ग) कटुभाषी (घ) अनंत

(ङ) अल्पाहारी (च) सर्वज्ञ

5. (क) दर्शनीय (ख) लाइलाज (ग) निम्नलिखित (घ) निराकार

6. (क) नीरस (ख) लोकप्रिय (ग) अनियमित (घ) निर्दयी

पृष्ठ संख्या 90

1. (क) दिन (ख) घड़ा (ग) गोद (घ) साधारण
2. (क) एक से अधिक कार्य प्रकट करने वाले शब्द अनेकार्थक कहलाते हैं।
   (ख) दो या दो से अधिक (ग) भिन्न-भिन्न
   (घ) उपाय, खेत जोतने का यंत्र
3. (क) (iv) (ख) (v) (ग) (ii) (घ) (iii) (ङ) (i)
4. (क) हथौड़ा, बादल (ख) शहद, अमृत
   (ग) पुर्जा, आने वाला, बीता हु कल (घ) आकाश, कपड़ा
   (ङ) बच्चा, सिर के बाल (च) पंख, ऊपर
5. (क) उपाय (ख) रंग (ग) शरीर (घ) उत्तर (ङ) चोट
6. (क) काल- मृत्यु से कोई नहीं बच सकता काल- समय बहुत बलवान है।
   (ख) मेरे कर में पाँच उँगलियाँ हैं। मुझे कल कर भरने जाना है।
   (ग) मैंने लाल अंबर पहना है। आज अंबर तारों से भरा है।

करें और सीखें

(क) केश (ख) रंग, अक्षर (ग) मदिरा, शहर (घ) इंद्र
(ङ) स्वभाव

पृष्ठ संख्या 95

1. (क) कवयित्री (ख) अलौकिक (ग) परिस्थिति (घ) शताब्दी
2. (क) नीति (ख) गृहिणी (ग) कवयित्री (घ) राज्याभिषेक
3. (क) सदैव (ख) दुर्घटना (ग) दवाइयाँ (घ) अध्ययन
   (ङ) कालिदास (च) हिंदुस्तान
4. (क) आपको कोई काम था। (ख) हमने कल आपसे कहा था।
   (ग) आपने भोजन किया? (घ) उसके प्राण निकल गए।

करें और सीखें

(क) हँसना- हँसना स्वास्थ्य के लिए अच्छा होता है।
(ख) कल मेरी छुट्टी है।
(ग) मैं बाज़ार गई परन्तु सामान नहीं ला पाई।
(घ) मुझे दाल के साथ प्याज़ खाना पसंद है।
(ङ) आशीर्वाद- माँ-बाप का आशीर्वाद लेकर काम का आरम्भ करो

पृष्ठ संख्या 99

1. (क) संदेह होना (ख) बहुत बड़ी हानि होना
   (ग) भटकना
2. (क) जो वाक्यांश सामान्य अर्थ न देकर विशेष अर्थ प्रकट करें मुहावरा कहलाता है।
   (ख) लोक अनुभव से बनी युक्ति को लोकोक्ति कहते है।
   (ग) मुहावरे विशेष अर्थ प्रकट करते हैं जबकि लोकोक्ति आम लोगो के अनुभवों पर आधारित होती है।

3. (क) आँखों का तारा (ख) दाँत खट्टे करना
(ग) नाक में दम करना (घ) काम पर जूँ न रेंगना
(ङ) कोल्हू का बैल (च) आग में घी डालना
(छ) अपना उल्लू सीधा करना

4. (क) () (ख) () (ग) () (घ) ()

पृष्ठ संख्या 102

1. (क) (I) टेलीविज़न
(ii) शिक्षा और मनोरंजन की ज़रूरतों को पूरा किया है।
(iii) प्रिंट मीडिया के शब्द और रेडियों की ध्वनि के साथ जब टेलीविज़न के दृश्य मिल जाते हैं तो सूचना विश्वसनीय बन जाती है।
(iv) टेलीविज़न- जनसंचार का माध्यम

(ख) (i) निराश (ii) योजक चिह्न
(iii) परिस्थितियों का हिम्मत के साथ मुकाबला करने पर लक्ष्य की प्राप्ति होती है।

(ग) (i) पंखा (ii) परन्तु
(iii) बंदर को स्वयं से दूर रखने के लिए समझाया।
(iv) बंदर को जंगल में छोड़ आया।
(v) वानर,

(घ) (i) हिमालय (ii) दोनों (iii) दवाइयाँ
(iv) खेतों की सिंचाई की जाती है।
(v) जड़ी-बूटियाँ (vi) हिमालय को

पृष्ठ संख्या 106

प्रदूषण की संमस्या

प्रकृति और मनुष्य का गहरा संबंध है। प्रकृति ने मानव को सुखी जीवन जीने के लिए अनेक सुविधाएँ प्रदान की है। मनुष्य का सुखी जीवन जीने के लिए अनेक सुविधाएँ प्रदान की है। मनुष्य का सुखी जीवन संतुलित प्राकृतिक पर्यावरण पर निर्भर करता है। मानव की बढ़ती जनसंख्या और उनकी आवश्कताओं की पूर्ति के कारण उसमें असंतुलन बढ़ गया है। वृक्षों को अंधाधुंध काटने से वातावरण की मात्रा बढ़ गई है। हम अपनी पवित्र नदियों में गंदगी डालकर उसे भी दूषित कर रहे हैं तथा कारखानों से निकले ज़हरीले पदार्थों से धरती भी दूषित हो रही है। सड़कों पर मोटर-गाड़ियों का शेर ध्वनि प्रदूषण को बढ़ा रहा है। यदि मनुष्य चाहता है। कि वह सुखी और स्वस्थ जीवन जीए तो उसे वायु, भूमि, जल और ध्वनि प्रदूषण से स्वयं को बचाना होगा। अधिक से अधिक पेड़ लगाकर तथा उसे अपने इच्दाओं को कम करके हम प्रत्येक प्रदूषण से स्वयं की रक्षा कर पाएँगे।

व्यायाम का महत्त्व

'पहला सुख निरोगी काया' सबसे बड़ा सुख अपने शरीर को बीमारियों से बचाकर रखना है। यदि हमारा शरीर और मन दोनों स्वस्थ हैं तो सारे संसार के सुख हमारे कदमों में है। स्वस्थ्य शरीर में ही स्वस्थ रखने के लिए प्रातः कालीन सैर के साथ-साथ व्यायाम ाीि आवश्यक हैं। व्यायाम करने से पसीना बहता है। जिस कारण विषैले तत्व शरीर से बाहर निकल जाते हैं। व्यायाम करने से भूख लगती है, कार्य करने का मन होता है इससे शरीर हृष्ट-पुष्ट बनता है। बचपन में खेलना, दौड़ना, भागना तथा युवावस्था में कसरत कर शरीर को सुदृढ़ बना सकते हैं। प्रोढ़ावस्था में जब स्वास्थ्य बिगड़ जाता है, आँखे कमज़ोर होने लगती है तब व्यायाम ही काम आता है। ताज़ी व खुली हवा में साँस लेना चाहिए। व्यायाम करने से रकत का संचार बढ़ता है पाचन क्रिया ठीक रहती है, हम आलसी नहीं बनते। अतः हमें बचपन से ही व्यायाम की आदत डालनी चाहिए ताकि हम सदा स्वस्थ रह सकें।

वर्षा ऋतु

भाारत में छह ऋतुएँ होती है- वसंत, ग्रीष्म वर्षा, शरद, हेमंत, शिशिर। वर्षा ऋतु जुलाई-अगस्त के महीने में आकर प्यासी धरती को तो तृप्त करती ही है किसान के होंठो पर भी मुस्कान ले आती है। अत्यधिक गर्मी में उमड़ते घुमड़ते बादलों को देख मानव तथा प्रत्येक प्राणी का मन नाच उठता है। वर्षा ऋतु का सौंदर्य इतना मनोहारी होता है किसभी जीव नाच उठते हैं। वर्षा-ऋतु में कभी मूसलाधार वर्षा होने से चारों तरफ जल ही जल दिखाइ देता है। बच्चे आनंदमग्न होकर जल-क्रीड़ा करते हैं। वर्षा में मेंढ़क टर्राने लगते हैं, मोर नृत्य करते हैं और कोयल मधुर स्वर में गाती है। वर्षा ऋतु में रक्षाबंधन और कृष्ण जन्माष्टमी त्योहार भी मनाए जाते है। स्वतंत्रता दिवस भी इसी ऋतु में पड़ता है। ग्रामीण महिलाएँ झूला-झूलते हुए गीत गाती हैं। यह ऋतु हमें सौंदर्य और कर्म करने की प्रेरणा देती है।

मेरी दिल्ली

दिल्ली भारत की राजधानी है। इसलिए इसे भारत का दिल कहा जाता है। इसका ऐतिहासिक दृष्टि से महत्त्व है। सबसे पहले पांडवों ने इसे इंद्रप्रस्थ के रूप में बसाया था। यहाँ मुगल शासकों ने राज किया। दिल्ली में अनेक दर्शनीय स्थल है। जिसे देखने के लिए अनेक सेलानी आते हैं। यहाँ का लाल-किला जो कि यमुनाकिनारे स्थित है। पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र है। यहीं से प्रधानमंत्री राष्ट्र के नाम संदेश स्वतंत्रता दिवस पर प्रस्तुत करते हैं। दिल्ली की जामा-मस्ज़िद वास्तुकला का सुंदर नमूना है। पुराना किला और इंडिया गेट पर पर्यटक तो पर्यटक स्वयं भारतीय भी पिकनिक मनाने आते हैं। अब तो मेट्रो ने दिल्ली को चार-चाँद लगाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। लाखों लोग प्रतिदिन इस खूबसूरत सवारी को आनंद लेते हैं। दिल्ली मेरी है, मेरे अपनों को है, हम सब की है। इसे स्वच्छ बनाना व रखना हर दिल्ली वासी का कर्तव्य है।

मेरा गाँव

मेरा गाँव सुंदर-सलोना, हरा-भरा, सरसों के पीले फूलों से लहराता मुझे बहुत अच्छा लगता है। मेरे पिता जी व दादा जी बताते हैं कि हम बचपन में खेतों से तोड़कर गाज़र मूली खाया करते थे। खेल-खेल में ही बीज बोते, उसकी सिंचाइ करते व फ़सल पकने पर उसकी कटाई भी करते थे। हमारे आँगन में हमेशा गाय बंधी रहती जिसका दूध, दही, माखन खाकर हम स्वस्थ रहते। चारों तरफ हमें भरे पेड़ों से घिरे गाँव में दूषित वातावरण का नाम न था जब से हमारे गाँव

को सड़क के साथ जोड़ा है तभी से यहाँ का वातावरण भी दूषित होने लगा है। पहले सी स्वच्छता व ताज़गी देखने को नहीं मिलती। बहुत से घरों के बच्चे पढ़ लिख कर शहर में नौकरी कोचले गए हैं। पर मेरे दादा-दादी आज भी वहीं है और हर गर्मी की छुट्टियों का मुझे इंतज़ार रहता हैं क्योंकि हम सब मिलकर उस ग्रामीण वातावरण में मस्ती करते हैं। मुझे मेरा गाँव सबसे प्यारा लगता है।

मेरा प्रिय खिलाड़ी

मेरा प्रिय खिलाड़ी क्रिकेट का मास्टर ब्लास्टर सचिन तेंदुलकर है। सचिन ने 16 वर्ष की आयु में अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट में पाँव रखा था अपनी बल्लेबाज़ी में उन्होंने कई कीर्तिमान स्थापित किए हैं। इन्होंने टैस्ट व एकदिवसीय क्रिकेट दोनों में सर्वाधिक शतक अर्जित किए हैं। वे टेस्ट क्रिकेट में सर्वाधिक रन बनाने वाले बल्लेबाज़ है। 2012 में उन्होंने एकदिवसीय क्रिकेट से संन्यास ले लिया। 2013 में उन्होंने अपना आखिरी मैच वैस्ट इंडभ्ज के खिलाफ खेला था और यह उनका 200वाँ मैच था। 1994 में इन्हें अर्जुन अवार्ड तथा 1997 में राजीव खेल खत्न, 1999 में पद्म श्री तथा 2013 में भारत रत्न से नवाज़ा गया। हम सभी प्रशंसक इन्हें लिटिल मास्टर या मास्टर ब्लास्टर के नाम से पुकारते हैं। इनके विश्व भर में अनेक प्रशंसक हैं। मैं इन्हें बहुत पसंद करता हूँ और कभी न कभी इन से अवश्य मिलूँगा।

पृष्ठ संख्या 111

(क) प्रिय भाई,

सप्रेम नमस्कार।

कल ही तुम्हारे प्रधानाध्यापक के फोन द्वारा पता चला कि आप पढ़ाई की ओर ध्यान न लगाकर फोन पर गेम खेलने में अपना समय व्यर्थ करने में लगे हों। प्रिय छोटे भाइ, पिताजी ने तुम्हारे उज्ज्वल भविष्य के सपने देखे हैं इसलिए तुम्हें छात्रावास में रहकर पढ़ने भेजा है। इन खेलों के लिए आपके पास अभी बहुत समय है। समझदारी से काम लेते हुए अपनी पढ़ाई की तरफ मन लगाओं और अपनी समस्याओं के समाधान हेतु अध्यापकों से बात करों। तुम स्वयं समझदार हो, मैं तुम्हें अधिक नहीं लिखते हुए यही कहूँगा कि तुम्हारा सुनहरा भविष्य तुम्हारे लिए बाहें फैलाया खड़ा है, जाओं और गले लग जाओं। माता-पिता की तरफ से ढेर-सा प्यार व आशीर्वाद।

तुम्हारा अग्रज
वरुण चावला

ख सेवा में
प्रधानाचार्य जी,
केंद्रीय विद्यालय
दिल्ली।

विषयः पुस्तकालय की स्थापना हेतु पत्र।

मान्यवर,

मैं पाँचवी कक्षा का छात्र हूँ। श्रीमान हमारे स्कूल में खेल का मैदान, कंम्प्यूटर रूम तथा अन्य सुविधाएँ भी है। कमी है तो केवल एक पुस्तकालय की। यदि आप हमारी प्रार्थना स्वीकार

करें तो एक पुस्तकालय अवश्य खुलवा दीजिए जिसमें विभिन्न विषयों के अतिरिक्त कहानियों की किताबें भी हों ताकि बच्चे अपनी रूचि के अनुसार उनहें पढ़कर अपने शब्द ज्ञान तथा भाषा ज्ञान में वृद्धि कर सकें। हमें पूर्ण आशा है आप इस विषय पर अवश्य विचार करेंगे।

धन्यवाद।

आप का आज्ञाकारी शिष्य,

विक्रम

.. जनवरी, 20..

(ग) सेवा में

अधिकारी महोदय,

मुख्य नगर निगम कार्यालय,

दिल्ली।

विषयः बढ़ती गंदगी की ओर ध्यान दिलाने हेतु पत्र।

महोदय,

मैं रोहिणी सेक्टर-27 का निवासी हूँ और अपने क्षेत्र में फैले कूड़ा-करकट से परेशान होकर पत्र लिख रहा हूँ। इस क्षेत्र में कई-कई दिनों तक कूड़ा पड़ा रहता है हवा से इधर-उधर फैल जाता है घर से निकलना मुश्किल हो गया है। बच्चे, बूढ़े घरों से बाहर निकलने से घबराते हैं। पूरा क्षेत्र बीमारियों का घर बन चुका है। मलेरिया, डेगूँ जेसी बीमारियाँ हर घर का हिस्सा बन चुकी है। आपसे अनुरोध है कि इस ओर ध्यान देते हुए कूड़ा उठवाने हेतु कर्मचारी भेजे ताकि यहाँ का आम नागरिक अपना जीवन जी सकें।

धन्यवाद

भवदीय

यतिन

.. जनवरी 20..

(घ) प्रिय मित्र,

नमस्कार।

बहुत दिनों से तुम्हारा पत्र नहीं आया सोचा में ही लिख दूँ। आशा है तमु व तुम्हारा परिवार सभी स्वस्थ होंगें मित्र, तुम्हें पता है मेरे बड़े भैया की शादी 21 फरवरी, 2019 को होनी निश्चित हुई है और आप सभी को इस अवसर पर अवश्य आना है। चाचा, चाची व छोटी बहन को भी लाना। मुझे पता चला है। कि तुम्हारे पेपर 18 फरवरी, 2019 को समाप्त हो जाएँगे। इसलिए बहाना नहीं चलेगा, आना है तो मतलब आना है। हम सभी आप का इंतजार करेंगे।

तुम्हारा मित्र,

वरुण

.. जनवरी, 20..

(ङ) सेवा में
कक्षा अध्यापिका जी,
जैन भारतीय स्कूल,
दिल्ली।
विषयः देर से आने की माफ़ी हेतु पत्र।

महोदया,

मैं पाँचवी कक्षा का छात्र हूँ और आपसे कक्षा में पिछले कुछ दिनों से देर से आने की माफी चाहता हूँ। असल में पिछले कुछ दिन से मेरी माता जी का स्वास्थ्य ठीक नहीं है। जिस कारण मुझे पिता जी के साथ उठकर सभी कार्यों में सहायता करनी पड़ती है। मेरे छोटे भाई-बहन को तैयार करकेीाी अपने साथ ही स्कूल लाना पड़ता है। इन सभी कार्यों को करते हुए देर हो जाती हैं आज माँ का अहसास होता है। किमाँ कितनी सुघड़ता व सावधानी से सभी कार्यों को पूर्ण कर लेती थी। अध्यापिका जी, आप मुझे मेरे देरी से आने पर क्षमा कर दें, मैं अपना सभी कार्य पूर्ण करके ज़ल्द ही आपको दिखा दूँगा।

धन्यवाद।
आपका आज्ञाकारी शिष्य,
अमनदीप
.. जनवरी, 20..

पृष्ठ संख्या 116

समय का सदुपयोग

किसी कवि ने उचित ही कहा है- 'समय को बरबाद मत करो क्योंकि जीवन इसी से बना है। समय सबसे अधिक मूल्यवान है। धन की महत्ता को भी नकारा नहीं जा सकत पर समय ऐसा धन है जो चला गया तो वापिस लौटकर कभी नहीं आता जबकि धन को कभी भी परिश्रम द्वारा दुबारा प्राप्त किया जा सकता है।

समय का सदुपयोग यही है कि प्रत्येक कार्य को समय पर किया जाए। उचित वक्त बीत जाने पर किया कार्य निष्फल होता है। जैसे गाड़ी छूटने के बाद स्टेशन पहुँचना, फ़सल नष्ट हो जाने के बाद दवाई छिड़कना या परिणाम आ जाने के पश्चात पढ़ाई करना व्यर्थ है। तुलसीदास जी कहते हैं- 'का बरखा जब कृषि सुखाने' उस वर्षा का क्या फायदा जब फ़सल सूख कर नष्ट हो गई हो।

समय की उपेक्षा करने वो की समय भी उपेक्षा करने लगता है। वह उसे पूरी तरह नष्ट कर डालता है। 'यदि हम समय को नष्ट करते हैं तो समय हमें नशट करने लगता है। तभी तो कबी जी कहते थे।

काल करें सो आज कर, आज करे सो अब'' किसी भी कार्य को कल पर मत छोडिए उसे समय रहते कर डालिए नहीं तो बाद में पछताना पड़ सकता है।

समय के प्रति सावधान बने रहना समय का सबसे सम्मान है। जो समय का सम्मान नहीं करते, समय उनका सम्मान नहीं करता। सूर्य और चंद्रमा या नक्षत्र मंडल के सभी ग्रह यदि अपना-अपना कार्य करना बंद कर दें तो आप सभी जानते हैं कि क्या होगा। लाल बत्ती और हरी बत्ती यदि अपना कार्य करना बंद कर दें तो क्या होगा क्षण भर में वहाँ गाड़ियोंका जाम होगा।

समय की पाबन्दी को अपनाकर इन सबसे बचा जा सकता है।

जीवन में सफलता प्रापत करने के लिए समय के अनुकूल चलना तथा उसका सदुपयोग करना अनिवार्य है। हमें पढ़ाई के वकत पढ़ाई खेल के समय खेल तथा अन्य कार्यों को करते समय, समय के महत्तव को समझना चाहिए। समय एक ऐसे गंजे सर वाले व्यकित की भाँति है जिसे पीछे से पकड़ा नहीं जा सकता। समय का सुदपयोग करें व जीवन को सार्थक बनाए।

स्वत्रंता दिवस

भाारत त्योहारों का देश है। यहाँ समय-समय पर त्योहार आकर जीवन में रंग भर जाते हैं कुछ त्योहार धार्मिक व कुछ राष्ट्रीय त्योहार हैं। होली, दीवाली, दशहरा धार्मिक हैं तो स्व्तंत्रता दिवस राष्ट्रीय पर्व है। इस दिन को प्रत्येक भरतीय एक पर्व के रूप में मनाता है। रूह दिन हमें अंग्रेजों से हटी गुलामी की याद दिलाता है।

15 अगस्त, 1947 को देश आज़ाद हुआ था। इस दिन भारतीयों ने अंग्रेजों को देश से बाहर कर यह साबित किया कि भारतीय गुलामी में नहीं रह सकते। अंग्रेजों के बढ़ते अत्र्याचारों से सारे भारतीय त्रस्त हो गए और उनमें विद्रोह की ज्वाला भड़की देश के वीरों ने अपने प्राणों की बाज़ी लगाकर गोलियाँ खाई और अंततः आज़ादी पाकर ही चैन लिया। आज़ादी मिलने के कारण ही इसे हम स्वतंत्रता दिवस के रूप में मनाते हैं।

अंग्रेजों के अत्याचारों से दुखी होकर भारतीय जनता एक जुट होकर उनसे छुटकारा पाने के लिए कृतसंकल्प हो गई। सुभाष चंद्र बोंस, चंद्रशेखर आज़ाद, भगतसिंह ने क्रांति की आग जलाई और अपने प्राणों की आहुति दी। गाँधी जी, नेहरू जी ने सत्य, अहिंसा से लड़ाई लड़ी। सत्याग्रह आंदोलन हुए, लाठियाँ खाई कई बार जेल गए तािा अंग्रेज़ों को भारत छोड़कर जाने पर मज़बूर कर दियां इसी कारण 15 अगस्त 1947 का दिन हमारे लिए स्वर्णिम बना।

1947 से आज तक इस दिन को हम बड़े उत्साह व प्रसन्नता के साथ मनाते चले आ रहे हैं। इस दिन सभी विद्यालयों व सरकारी कार्यालयों पर राष्ट्रीय ध्वज फहराया जाता है।, राष्ट्रीयगीत गाया जाता है। शहीदों को श्रद्धाजलि दी जाती है जिन्होंने स्वतंत्रता हेतु प्रयत्न किए कुर्बानियाँ दी। राजधानी दिल्ली में प्रधानमंत्री लाल किले पर तिरंगा फहराते हैं। अनेक रंगारंग कार्यक्रम होते हैं।

इस दिन का ऐतिहासिक महत्तव है। इस दिन की याद आते ही उन शहीदों के प्रति सभी भारतीय श्रद्धा से नतमस्तक हो जाते है। हम सभी का कर्तव्य है कि देश का नाम विश्व में रोशन करें। देश की प्रगति में साधक बने न कि बाधक। हमें अच्छे कार्य करने है और देश को आगे बढ़ाना है।

जवाहरलाल नेहरू

15 अगस्त 1947 को देश के आज़ाद होते ही भारत के पहले प्रधानमंत्री पं0 जवाहर लाल नेहरू बने थे। इनका जन्म 14 नवम्बर, 1889 को इलाहाबाद के एक धनी परिवार में हुआ था। इनके पिता पेशे से वकील थे। नेहरू जी को दुनिया के अच्छे स्कूलों व विश्वविद्यालयों में शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिला।

पं0 नेहरू आरम्भ से ही गाँधी जी से प्रभावित थे। उन्होंने 1928 में साइमन कमशीन के समय विरोध किया तथा 1930 में नमक आंदोलन में भी वे गिरफ़्तार हुए। वे अंतराष्ट्रीय नेता थे। नेहरू जी ने चीन के साथ मित्रता का हाथ बढ़ाया पर 1962 में चीन ने धोखे से भारत पर

आक्रमण कर दिया। चीन का आक्रमण जवाहर लाल नेरू के लिए एक बड़ा सदमा था शायद इसी कारण 27 मई 1964 को दिल का दौरा पड़ने से उनकी मृत्यु हो गई।

नेहरू जी बच्चों से बहुत प्यार करते थे। वे उन्हें चाचा नेहरू के नाम से जानते थे। नेहरू जी का कहना था कि बच्चे देश का भविष्य हैं। उनकी देखभाल करना माता-पिता का कर्तव्य है। वे देश के भावी, कर्णधार हैं। नेहरू जी के पत्र 'बहन के ना' नेहरू जी के पत्र पुत्री इंदिरा के नाम' बहुत ही प्रसिद्ध है। उनमें प्रकृति, संसार, मनुष्य आदि की जानकारी के साथ उनकी सोच के विषय में भी पता चलता हैं नेहरू जी भारतीयों के दिलों में सदा याद किए जाएँगे। उनकी पुत्री इंदिरा गाँधी ने लगभग 25 वर्षों तक भारत की सेवा की।

वसंत-ऋतु

भारत ऋतुओं का देश है। समय-समय पर होने वाले परिवर्तन हमें जीवन जीने के रहा दिखाते हैं। वसंत एक ऐसी सुहानी ऋतु हैं जिसे सभी पसंद करते हैं। यह ऋतु सभी को आनंद देने वाली ऋतु है। सर्दियों के पश्चात इस ऋतु का आगमन होता है। ठंड से राहत मिलती है।

वसंत ऋतु में तापमान में नमी आती है सभी जगह हरे-भरे पेड़ों और फूलों के कारण हरियाली छा जाती है। इस ऋतु के त्योहार को वसंत पंचमी के नाम से मनाते हुए लोग खुशी से गाते हैं। आया वसंत पाला उड़त। इसके आने पर सर्दियों का अंत हो जाता है। सब जगह खुशहाली छा जाती है।

हम सभी हल्के रंगों के कपड़े पहनना पसंद करते है। कभी भी घर से बाहर आ जा सकते हैं बच्चे पतंग उड़ाते है। इस मौसम की शुरुआत होली के रंगों से होती है। पानी के साथ होली खेलने का अलग ही आनंद आता है। फरवरी, मार्च का महिना लगभग वसंत ऋतु का ही माना जाता है। इस मौसम का आनंद गर्मियों के रूप में खत्म हो जाता है।वसंत ऋतु के मौसम में तापमान सामान्य रहता है। न तो अधिक गर्मी न अधिक सर्द्री होती हैं रात का मौसम और भी अधिक सुहावना और आरामदायक हो जाता हैं वसंत ऋतु बहुत प्रभावशाली होती है, जब यह आती हे, तो प्रकृति में सब कुछ जाग्रत कर देती हैं सैसे पेड़-पौधे, घास, फूल, फसले, पशु जाग्रत हो जाते हैं। मनुष्य नए व हल्के वस्त्र पहनते हैं। पेड़ों पर नई पत्तियों और शाखाएँ आती है फूल तरोताज़ा और रंगीन हो जाते हैं। प्रकृति हरी-भरी और ताज़ी लगती है।

वसंत पंचमी के दिन लोग पतंग बाजी करते हैं। इस दिन सभी पीले वस्त्र पहनते हैं तथा घर-घर में पीले चावल व केसरी खीर बनाई जाती है। कई जगह इस दिन में ले भी लगते है। प्रकृति की इस खूबसूरती को आँखों में बसाने का मन करता है। यूँ कहा जा सकता है कि प्रकृति अपने यौवन पर होती है।

शिक्षा का महत्त्व

शिक्षा सभी के लिए जीवन में आगे बढ़ने और सफलता प्राप्त करने के लिए आवश्यक है। शिक्षा न केवल सोचने समझने की शक्ति को तीव्र करती है। अपितु आत्मविश्वास भी विकसित करती हैं यह व्यक्ति के व्यक्तित्व का निर्माण करती है। स्कूली शिक्षा सभी के जीवन में महान भूमिका निभाती है।

प्राथमिक शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा और उच्च शिक्षा। शिक्षा के सभी भाग एक विशेष महत्व रखते है। प्राथमिक शिक्षा आधार प्रदान करती है। और जीवन भर मदद करती है। माध्यमिक शिक्षा आगे की पढ़ाई का रास्ता और उच्च माध्यमिक शिक्षा पूरे जीवन भविष्य में आगे बढ़ने का

रास्ता है। हम भविष्य में किन प्रकार के नागरिक बनेंगे यह भी शिक्षा निर्धारित करती है।

सभी के लिए शिक्षा प्रापत करना आवश्यक है। उच्च शिक्षा का महत्त्व नौकरी अच्दा पद प्राप्त करने के लिए बहुत अधिक बढ़ गया हैं शिक्षा हमारे ज्ञान को, तकनीकी कौशल तथा सामाजिक, मानसिक तथा बौद्धिक रूप को भी मजबूत बनाती है। सभी माता-पिता बच्चों को अच्छी शिक्षा दिलवाकर डॉ0, इंजीनियर बनाना चाहते है।

कुछ विद्यार्थी खेल, नृत्य, संगीत आदि की शिक्षा ग्रहण कर अपनी इच्छानुसार इन्हीं क्षेत्रों में आगे बढ़ते है। पूरी शिक्षण प्रक्रिया के दौरान प्रापत किया गया ज्ञान हम सभी को आत्म-निर्भर बनाता है। ग्रामीण क्षेत्रों में भी शिक्षा से समाज मेंसमानता कीभावना आती हैं यह देश व समाज की तरक्की में भी योगदान देती है। शिक्षा लड़का व लडत्रकी दोनों के लिए अनिवार्य है। दोनों मिलकर ही शिक्षित समाज का निर्माण करते हैं। शिक्षा किसी को भी बेहतर और सज्जन बनाती है।

विद्यार्थी जीवन

विद्या द्द अर्थी अर्थात् विद्यार्थी - विद्या को ग्रहण करने की इच्छा रखने वाला। विद्यार्थी जीवन साधना और तपस्या का जीवन है। विद्यार्थियों के लिए यह जीवन भावी जीवन की नींव है। यह प्राप्त ज्ञान को सुदृढ़ बनाने का समय है। इसे पाकर विद्यार्थी अपने सम्पूर्ण जीवन का आनंद प्राप्त कर लेता है।

पाँच वर्ष की आयु या इससे भी पहले आरम्भ हुआ यह जीवन बच्चों को जिज्ञासु बनाता है। शिक्षक व सहपाठियों के मध्य बैठ नन्हा बालक केवल पुस्तकीय ज्ञान ही नहीं जीवन के अनुभवों को भी ग्रहण करता है। इस उम में प्राप्त ज्ञान जीवन भर उसका पोषण करता है।

विद्या की चाह रखने वाले विद्यार्थी को उसका ग्ररु सही दिशा दिखाता हैं उसकी गणित की उलझनें सुलझाता है तथा भाषा से परिपक्व बना विचारों को नई दिशा प्रदान करता हैं सुख-दुख, गर्मी-सरदी की परवाह किए बिना विद्यार्थी जब अध्ययनरत रहता है। तब उसका जीवन सफल हो जाता है। ईमानदारी लगन, स्वाीािमान जैसे गुणों को धारण कर विद्यार्थी जीवन-पथ पर आगे बढ़ता चला जाता है।

खेल के मैदान से, भ्रमण से अथवा विज्ञान की प्रयोगशाला से हर जगह से वह शिक्षा प्राप्त करता हैं विद्यार्थी जीवन में पढ़ाई के अतिरिक्त भी बालक सहयोग की भावना, मित्रता, स्पर्धा आदि गुणों को सीख आगे बढ़ता है। इसी जीवन में व्यायाम व खेल के द्वारा शारीरिक पुष्टाा को भी प्राप्त करता है। विद्यार्थी जीवन में अच्छी आदतें अपनानी चाहिए। मधुर वाणी बोलनी चाहिए। पर्यावरण को स्वच्छ रखने हेतु कार्य करने चाहिए।

विद्यार्थी जीवन संपूर्ण जीवन का स्वर्णिम काल है। इसका पूरा-पूरा आनन्द उठाना चाहिए। सच्चा विद्यार्थी दूसरों की बातों में न आकर केवल अपनी बुद्धि पर नहीं, विवेक से काम करता हैं सच्चा और अच्छा विद्यार्थी देश व समाज को आगे बढ़ाने वाले कार्य करता है। वह न केवल अपने माता-पिता, स्कूल अपितु देश को भी गोर्वान्वित करता है।

पृष्ठ संख्या 120

(क) दो बकरिया थीं। दोनों को अपनी-अपनी ताकत पर घमंड था। दोनों स्वभाव से गुस्सैल थी। एक दिन दोनों एक पुल के ऊपर से गुज़र रही थी पुल संकरा था। दोनों की जिद्द थी कि पहले वह जाएगी। आपस में इसी विषय में दोनों में झगड़ा हुआ कोई भी मानने को तैयार न हुई और आपस में लड़ते-लड़ते मर गई।

(ख) एक व्यापारी ने मेले में दुकान लगाकर समान बेचा और खूब धन कमाया। घर लौटते समय देर हो गई और रास्ता भी जंगल का था। बहुत तेज़ वर्षा हो रही थी वह भीग गया और ईश्वर को कोसने लगा। तभी वहाँ डाकू आ गए और उसे धन देने को कहने लगे। न देने पर गोली मारने की बात कही। व्यापरी वहाँ से भाग गया। डाकू ने गोली चलाई पर वर्षा के कारण बारूद भीग गया और गोली नहीं चली। व्यापारी ने जान व धन बचने पर ईश्वर को धन्यवाद दिया।

2. (क) एकता में बल

एक किसान के चार पुत्र थे चारों आलसी थे। और झगड़ते रहते थे। कोई काम नहीं करते थे एक दिन किसान बीमार पड़ गया। उसने बच्चों को बुलाकर उनसे लकड़ी का गट्ठर लाने को कहा। जब लकड़ियाँ आ गई तो उसने बारी-बारी से उस गट्ठर को सभी बेटों को तोड़ने के लिए कहा- सभी ने प्रयत्न किया पर गट्ठर न टूटा। अब किसान ने गट्ठर से सारी लकड़ियों को अलग किया और एक-एक लकड़ी हर बेटे को तोड़ने के लिए दी तो हरेक ने बड़ी आसानी से उसे तोड़ दिया। अब किसान ने अपने बेटों को समझाया इन लकड़ियों की भाँति मिलकर रहोगे, काम करोगे तो तुम्हें कोई तोउ. नहीं पाएगा। यदि अलग-अलग रहोगे तो इन्हीं लकड़ियों की भाँति टूटकर बिखर जाओंगे। किसान की बात उसके बेटों ने समझी और आपस में मिलकर रहने और काम करने का निर्णय लिया।

(ख) लालच बुरी बला

एक कुत्ते को कही से रोटी मिली। उसने एकांत में, शांति से बैठकर खाने काक निश्चय किया। इसलिए वह उसे लेकर चल पड़ा। रास्ते में नदी पड़ती थी। कुत्ता मुँह में रोटी दबाइ नदी के पुल के ऊपर से जा रहा था कि उसने नदी के अंदर भी कुत्ते को रोटी ले जाते देखा। असल में वह उसकी परछाई थीं पर उसने दूसरा कुत्ता समझ उसकी रोओी दिनने का प्रयत्न करते हुए भौंकना शुरु कर दिया। मुँह में दबाई रोटी भी नदी में गिर गई। कुत्ते के पास पछताने के अलावा कुछ न था। इसलिए कहते हैं लालच बुरी बला है।

(ग) राजा और बंदर

एक राजा था। उसके पास एक बंदर था जो उसके सभी कार्य करता था। यहाँ तक कि राजा के सो जाने पर पंखा झलने का कार्य भी बंदर ही करता था। राजा के सभी दरबारी राजा को समझाते थे कि यह एक जानवर हैं इस पर इतना विश्वास करना ठीक नहीं, पर राजा किसी की बात नहीं सुनता थां एक दिन राजा सो रहा था, बंदर पंखा झल रहा था। पर एक मक्खी बार-बार राजा के नाक पर आकर बैठ जाती। बंदर उड़ाता फिर बैठ जाती। बंदर ने उसे मारने के लिए तलवार उठा ली और वार करने लगा तभी वहाँ खड़े प्रहरी ने देख लिया और उसने शोर मचाकर तलवार बंदर के हाथ से छीन ली। अब राजा को समझ आ चुका था कि जानवर जानवर ही हैं अगले दिन सुबह ही राजा ने बंदर को जंगल भिजवा दिया। जान बची तो लाखों पाए' राजा के मुँह से यह कहावत निकली।

(ग) मेहनत का फल

राजा अपना राजय हार चुका था। दुश्मनों से बचकर गुफा में छिपकर बैठा था। तभी उसकी नज़र चींटियों पर पड़ती हैं जो एक-एक दाना ले जाकर ऊपर चढ़ना चाहती है। पर बार-बार कुछ ऊपर चढ़ने पर दाना नीचे गिर जाता। चींटी फिर वापिस आती, फिर दाना लेकर ऊपर

चढ़ती। बार-बार ऐसा करने पर भी उसे सफ़लता नहीं मिल रही थी। राजा बड़े ध्यान से चींटी के इस कार्य को देख रहा था। राजा ने देखा कि सत्रहवीं बार में चींटी अपना दाना ऊपर ले जाने में सफल हो गई। राजा सोचने लगा इस छोटी-सी चींटी ने परिश्रम करना नहीं छोड़ा जब तक कि उसे सफलता नहीं मिल गई। फिर मैं तो एक इंसान हूँ मैं अपने जीवन में हार कैसे मान सकता हूँ। इस बार राजा ने पूरी ताकत से सेना का निम्र्राण किया और हिम्मत व साहस से दुश्मन का मुकाबला कर अपने राज्य को वापिस प्राप्त कर लिया। राजा ने कहा- उसे एक छोटी सी चींटी के परिश्रम से सीख मिली है अब वह अपने जीवन में कभी निराश नहीं होगा और न ही जीवन से परिश्रम को त्यागेगा।

अलंकार हिंदी व्याकरण

Interactive Resources

- Download the free app ‘Green Book House’ from google play.
- Free online support available on ‘www.greenbookhouse.com’.
- Ample teacher's support available.

GREEN BOOK HOUSE
(EDUCATIONAL PUBLISHER)
F-214, Laxmi Nagar, Mangal Bazar, Delhi-110092
Phone : 9354766041, 9354445227
E-mail : greenbookhouse214@gmail.com
Website: www.greenbookhouse.com